भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH)

प्रिलिम्स के लिये:

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत, **यूनेस्को**, प्रदर्शन कला, **कुटियाट्टम**, रामलीला, रम्माण, छऊ नृत्य, **कालबेलिया**, **मुडियेट्टु**, संकीर्तन, **नवरोज़**, **योग**, कुंभ मेला, **गढ़वाल हिमालय**, कुट्टमपालम, **रामचरितमानस**, **तुलसीदास**, **मार्शल आर्ट**, **महायान बौद्ध धर्म**, **वज्रयान बौद्ध धर्म**, मुद्रा, वैष्णववाद, दुर्गा पूजा, **गरबा**

मेन्स के लिये:

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का महत्त्व और इसके संरक्षण की आवश्यकता।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) क्या है?

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के अंतर्गत वे **प्रथाएँ, अभिव्यक्तियाँ, ज्ञान** और **कौशल आते** हैं, जिन्हें समुदाय, समूह तथा कभी-कभी व्यक्ति अपनी **सांस्कृतिक विरासत** के भाग के रूप में पहचानते हैं।

- इसमें ऐसी विरासत से जुड़े **उपकरण, वस्तुएँ, कलाकृतियाँ** और सांस्कृतिक स्थान भी शामिल हैं।
- ICH यह सुनिश्चित करता है कि सांस्कृतिक विरासत **स्मारकों** और वस्तुओं के संग्रह पर समाप्त न हो। इसमें **परंपराएँ या जीवंत अभिव्यक्तियाँ** भी शामिल हैं।

वे कौन-से डोमेन हैं जिनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत प्रकट होती है?

- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिये **यूनेस्को** के वर्ष 2003 कन्वेंशन के अनुसार, ICH **पाँच व्यापक डोमेन** में प्रकट होता है:
  - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के वाहक के रूप में भाषा सहित **मौखिक परंपराएँ** और अभिव्यक्तियाँ।
  - **कला प्रदर्शन**
  - **सामाजिक प्रथाएँ,** रीति-रिवाज़ और उत्सव संबंधी कार्यक्रम
  - प्रकृति और ब्रह्मांड से **संबंधित ज्ञान व अभ्यास**
  - पारंपरिक **शिल्प कौशल**

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत क्या है?

- ICH ऑफ ह्यूमैनिटी की प्रतिनिधि सूची में **गुजरात के गरबा (2023)** के हालिया शिलालेख के साथ, भारत के पास अब प्रतिष्ठित यूनेस्को की ICH ऑफ ह्यूमैनिटी की प्रतिनिधि सूची में **15 अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्त्व** हैं।
- भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची:

क्रम संख्या	**अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्त्व**	**शिलालेख का वर्ष**
1.	कुटियाट्टम, संस्कृत थियेटर	2008
2.	वैदिक जप की परंपरा	2008
3.	रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन	2008
4.	रम्माण, भारत के गढ़वाल हिमालय के धार्मिक उत्सव और परंपरा का मंचन	2009
5.	छऊ नृत्य	2010
6.	राजस्थान के कालबेलिया लोक गीत और नृत्य	2010
7.	मुदियेट्टू, केरल का अनुष्ठान थियेटर और नृत्य	2010

	नाटक	
8.	लद्दाख का बौद्ध जप: हिमालयी लद्दाख क्षेत्र, जम्मू और कश्मीर, भारत में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ	2012
9.	मणिपुर का संकीर्तन, अनुष्ठान गायन, ढोलक बजाना और नृत्य करना	2013
10.	जंडियाला गुरु, पंजाब, भारत के ठठेरों के बीच पारंपरिक तौर पर पीतल और ताँबे के बरतन बनाने का शिल्प	2014
11.	नवरोज़	2016
12.	योग	2016
13.	कुंभ मेला	2017
14.	कोलकाता में दुर्गा पूजा	2021
15.	गुजरात का गरबा	2023

- **कुटियाट्टम (केरल):**
  - कुटियाट्टम **केरल के सबसे पुराने पारंपरिक थियेटर में से एक** है जो **संस्कृत परंपराओं** पर आधारित है।
  - इसमें शैलीबद्ध और संहिताबद्ध रंगमंचीय भाषा में **नेत्र अभिनय (आँख की अभिव्यक्ति) तथा हस्त अभिनय (इशारों की भाषा)** प्रमुख हैं। इसमें मुख्य **चरित्र के विचारों और भावनाओं** पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
  - एक एकल कार्य को निष्पादित करने में कई दिन लग सकते हैं और एक **पूर्ण प्रदर्शन 40 दिनों** तक चल सकता है।
  - यह पारंपरिक रूप से **कुट्टमपालम (Kuttampalams)** नामक थियेटरों में प्रदर्शित किया जाता है, जो **हिंदू मंदिरों** में स्थित हैं।

//

- **वैदिक जप की परंपरा (भारत):**
  - **वेदों** में 3500 वर्ष पहले विकसित और रचित **संस्कृत कविता, दार्शनिक संवाद, मिथक तथा अनुष्ठान जपों** का एक विशाल भंडार शामिल है।
  - वेद **विश्व की सबसे पुरानी जीवित सांस्कृतिक परंपराओं** में से एक का प्रतीक हैं।
  - वैदिक विरासत में **चार वेदों** में एकत्रित अनेक पाठ और व्याख्याएँ शामिल हैं, जिन्हें आमतौर पर **"ज्ञान की पुस्तकें"** कहा जाता है, भले ही उन्हें मौखिक रूप से प्रसारित किया गया हो।
  - इस परंपरा का मूल्य न केवल इसके **मौखिक साहित्य** की समृद्ध सामग्री में निहित है, बल्कि **हज़ारों वर्षों से ग्रंथों को अक्षुण्ण बनाए** रखने में ब्राह्मण पुजारियों द्वारा अपनाई गई **सरल तकनीकों** में भी निहित है।
  - यद्यपि वेद समकालीन भारतीय जीवन में एक **महत्त्वपूर्ण भूमिका** निभाते हैं, एक हज़ार से अधिक वैदिक पाठ शाखाओं में से **केवल तेरह** ही बची हैं।

- **रामलीला (उत्तर भारत):**
  - रामलीला, शाब्दिक रूप से **"राम की लीला"** दृश्यों की एक शृंखला में **रामायण महाकाव्य** का प्रदर्शन है जिसमें **गीत, कथन, गायन और संवाद** शामिल हैं।
  - यह **राम और रावण** के बीच **युद्ध** की याद दिलाता है तथा इसमें देवताओं, ऋषियों एवं विश्वासपात्रों के बीच संवादों की एक शृंखला शामिल है।
  - यह **दशहरे** के त्योहार के दौरान पूरे उत्तर भारत में आयोजित की जाती है।
  - सर्वाधिक प्रचलित रामलीलाएँ **अयोध्या**, रामनगर और **बनारस, वृंदावन, अल्मोड़ा, सतना** तथा **मधुबनी** की हैं।
  - रामायण का यह मंचन रामचरितमानस पर आधारित है जिसकी रचना तुलसीदास ने 16वीं शताब्दी में की थी।

- **रम्माण (उत्तराखंड):**
  - यह प्रतिवर्ष अप्रैल के अंत में उत्तराखंड के सलूर-डुंगरा के जुड़वाँ गाँवों में मनाया जाता है।
  - यह संरक्षक देवता **भूमियाल देवता** के सम्मान में मनाया जाने वाला एक धार्मिक त्योहार है।
  - यह आयोजन अत्यधिक जटिल अनुष्ठानों से बना है। इसमें **राम महाकाव्य** और विभिन्न किंवदंतियों के एक **संस्करण का पाठ तथा गीतों एवं मुखौटा नृत्यों का प्रदर्शन** शामिल है।

- **क्षत्रिय जाति** के स्थानीय लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले भंडारी अकेले सबसे पवित्र मुखौटों में से एक, आधे आदमी, आधे शेर हिंदू देवता, **नरसिम्हा** का **मुखौटा पहनने** के हकदार हैं।

- **छऊ नृत्य (पूर्वी भारत):**
  - **छऊ नृत्य** में **महाभारत** और **रामायण** सहित महाकाव्यों के प्रसंगों, स्थानीय लोककथाओं तथा अमूर्त विषयों का अभिनय किया जाता है।
  - इसकी तीन **अलग-अलग शैलियाँ सरायकेला (झारखंड), पुरुलिया** (पश्चिम बंगाल) और **मयूरभंज** (ओडिशा) के क्षेत्रों से हैं, पहले दो में मुखौटे का उपयोग किया जाता है।
  - इसकी उत्पत्ति का पता **नृत्य और मार्शल प्रथाओं** के स्वदेशी रूपों से लगाया जा सकता है।
  - इसके आंदोलन में नकली **युद्ध तकनीकें, पक्षियों और जानवरों की शैलीगत** तथा गाँव की गृहिणियों के कामकाज़ पर आधारित गतिविधियाँ शामिल हैं।
  - यह नृत्य रात में एक खुली जगह में पारंपरिक और लोक धुनों के साथ किया जाता है, जिसे **रीड पाइप मोहरी तथा शहनाई पर बजाया** जाता है।

- **कालबेलिया लोक गीत और नृत्य (राजस्थान):**
  - गीत और नृत्य [कालबेलिया]() समुदाय की **पारंपरकि जीवन** शैली की अभव्यिक्त हैं।
  - कालबेलिया एक समय पेशेवर **साँप संचालक** थे। आज वे संगीत और नृत्य में अपने पूरव व्यवसाय को दोहराते हैं जो नए तथा रचनात्मक तरीकों से वकिसति हो रहा है।
  - लहराती काली स्करट में **महलिाएँ** नागनि की **हरकतों की नकल करते हुए नृत्य करती** हैं और घूमती हैं, जबकि **पुरुष खंजरी ताल वाद्य** तथा **पूंगी** पर उनका साथ देते हैं, जो पारंपरकि रूप से साँपों को पकड़ने के लयि बजाया जाने वाला एक लकड़ी का वाद्य यंत्र है।
  - नर्तक पारंपरकि **टैटू डज़िाइन, आभूषण और छोटे दर्पणों तथा चाँदी के धागे से कढ़ाई** वाले परधिान पहनते हैं।
  - गाने कालबेलया के **काव्य कौशल** को भी प्रदर्शति करते हैं, जो **प्रदर्शन के दौरान सहज रूप** से **गीत लखिने और गीतों को सुधारने के लयि** जाने जाते हैं।
  - पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रसारति, गीत और **नृत्य मौखकि परंपरा का हस्सिा** बनते हैं जसिके लयि कोई पाठ या प्रशक्षिण मैनुअल मौजूद नहीं है।

- **मुडयिट्टु (केरल):**
  - इसके बजाय शिव ने आदेश दिया कि दारिका की **मृत्यु देवी काली** के द्वारा ही होगी।
  - **मुडयिट्टु केरल** का एक अनुष्ठानिक नृत्य नाटक है जो **देवी काली** और राक्षस दारिका के बीच युद्ध की **पौराणिक कथा पर आधारित** है।
  - मुडयिट्टु कलाकार **मंदिर के फर्श** पर रंगीन पाउडर से देवी काली की एक विशाल छवि बनाते हैं, जिसे '**कलाम**' कहा जाता है, जिसमें **देवी की आत्मा का आह्वान** किया जाता है।
  - कलाकारों ने नाटक का मंचन किया जिसमें दिव्य **ऋषि नारद** ने राक्षस दारिका को नियंत्रित करने के लिये **शिव** को प्रेरित किया, जो नश्वर लोगों द्वारा पराजित होने के प्रति प्रतिरक्षित है।
  - मुडयिट्टू का प्रदर्शन प्रतिवर्ष चलक्कुडी पूझा, **पेरियार** **और मूवट्टुपुझा नदियों** के किनारे विभिन्न गाँवों में देवी के मंदिरों **'भगवती कावुस'** में किया जाता है।

- **बौद्ध जप (लद्दाख):**
  - **लद्दाख** क्षेत्र के मठों और गाँवों में, **बौद्ध लामा** (पुजारी) बुद्ध की भावना, **दर्शन एवं शिक्षाओं** का प्रतिनिधित्व करने वाले पवित्र ग्रंथों का जाप करते हैं।
  - लद्दाख में **बौद्ध धर्म** के दो रूप **महायान व** वज्रयान प्रचलित हैं और इसके चार प्रमुख संप्रदाय हैं, अर्थात्**निगिमा, कागयूद, शाक्य व गेलुक**।
  - प्रत्येक **संप्रदाय में जप के कई रूप** होते हैं, जिनका अभ्यास जीवन-चक्र अनुष्ठानों के दौरान तथा बौद्ध और कृषि कैलेंडर के महत्त्वपूर्ण दिनों की अवधि के दौरान किया जाता है।
  - भिक्षु **विशिष पोशाक** पहनते हैं तथा दिव्य बुद्ध का प्रतिनिधित्व करने वाले हाथ के इशारे **मुद्रा**) बनाते हैं और **घंटियाँ, ड्रम, झाँझ व तुरही जैसे वाद्ययंत्र जप को संगीतमयता एवं लय** प्रदान करते हैं।
  - यह जप समूहों में किया जाता है, या तो **घर के अंदर बैठकर या मठ** के **प्रांगणों** या **निजी घरों** में नृत्य के साथ।

- **संकीर्तन (मणपिुर):**
  - **संकीर्तन** में **मणपिुर के मैदानी** इलाकों में नविास करने वाले **वैष्णव लोगों** के जीवन के वभिन्नि चरणों और धार्मकि अवसरों को चहि्नति करने के लयि कयि‌ा जाने वाला अनुष्ठानकि **गायन, ढोलक बजाना और नृत्य** शामलि है।
  - कलाकार गीत और नृत्य के माध्यम से **कृष्ण** के **जीवन एवं कार्यों का वर्णन करते** हैं।
  - एक वशिष्टि प्रदर्शन में **दो ढोलक वादक** और लगभग **दस गायक-नर्तक** एक हॉल या घरेलू आँगन में **बैठे भक्तों से घरि हुए** प्रदर्शन करते हैं।
  - संकीर्तन के दो मुख्य **सामाजकि कार्य** हैं:
    - यह मणपिुर के वैष्णव समुदाय के भीतर एक **एकजुट शक्ति** के रूप में कार्य करते हुए उत्सव के अवसरों पर लोगों को संयुक्त करता है।
    - यह जीवन-चक्र से संबंधति समारोहों के माध्यम से व्यक्ति और समुदाय के बीच संबंधों को स्थापति एवं सुदृढ़ करता है।

- **पारंपरिक तौर पर पीतल और ताँबे के बर्तन बनाने का शिल्प (पंजाब):**
    - **जंडियाला गुरु के ठठेरों** का शिल्प पंजाब में पीतल और ताँबे के बर्तन बनाने की पारंपरिक तकनीक का अनुपालन करता है।
    - प्रक्रिया ठंडी धातु की टिकिया प्राप्त करके शुरू होती है, जिन्हें चपटा करके पतली प्लेट बना दी जाती है। फिर इन प्लेटों को हथौड़े से पीटकर घुमावदार आकार दिया जाता है, जिससे छोटे कटोरे, रिम वाली प्लेट, पानी और दूध के लिए बड़े बर्तन, बड़े खाना पकाने के बर्तन और अन्य कलाकृतियाँ बनती हैं।
    - यह प्रक्रिया **कूल मेटल केक** प्राप्त करके से शुरू की जाती है, जिन्हें चपटा करके पतली प्लेट बना दी जाती है। फिर इन प्लेटों को हथौड़े से पीटकर घुमावदार आकार दिया जाता है, जिससे **छोटे कटोरे, रिम वाली प्लेट, पानी और दूध के लिए बड़े बर्तन, बड़े खाना पकाने के बर्तन और अन्य कलाकृतियाँ** बनती हैं।
    - प्लेटों को गर्म करने, हथौड़े से पीटने और उन्हें विभिन्न आकारों में मोड़ने के लिये सावधानीपूर्वक **तापमान को नियंत्रित करने की आवश्यकता** होती है, जो ज़मीन में गाड़े गए **लकड़ी से चलने वाले छोटे स्टोव** (हाथ से पकड़े जाने वाली धौंकनी की सहायता से) का उपयोग करके प्राप्त किया जाता है।
    - बर्तनों को **रेत और इमली के रस जैसी पारंपरिक सामग्रियों** से पॉलिश करके मैन्युअल रूप से तैयार किया जाता है।

- **नवरोज़ (भारत):**
  - **[नवरोज़ पारसयिों (ज़ोरोएसट्रनिइज़्म)](#)** और **[मुसलमानों](#)** (शयिा व सुन्नी दोनों) के लयि नए वर्ष का जश्न है।
  - यह प्रतविर्ष **21 मार्च** को अफगानसि्तान, अज़रबैजान, **भारत**, ईरान, इराक, कज़ाखस्तान, करि्गज़िस्तान, पाकसि्तान, ताजकिसि्तान, तुर्की, तुर्कमेनसि्तान और उज़्बेकसि्तान में मनाया जाता है।
  - इस दौरान अपनाई जाने वाली एक **महत्त्वपूर्ण परंपरा अपने प्रयिजनों के साथ वशिष भोजन** का आनंद लेने के लयि **शुद्धता, चमक, आजीवकि और धन का प्रतीक वस्तुओं** से सज़ी **'टेबल' के चारों ओर एकत्रति** रहता है।

- **योग (भारत):**
  - **योग** में आसन, **ध्यान**, नयिंत्रति श्वास, शब्द जप और **अन्य तकनीकों की एक शृंखला शामलि** है जो व्यक्तयिों को **आत्म-बोध** करने, किसी भी पीड़ा को कम करने और **मुक्ति की स्थति** में सहायता करने के लयि अभकिल्पति की गई है।
  - यह अधकि मानसकि, **आध्यात्मकि** और **शारीरकि सुख (Physical Wellbeing)** के लयि मन को शरीर तथा **आत्मा के साथ एकीकृत करने** पर आधारति है।
  - परंपरागत रूप से योग को **गुरु-शषि्य मॉडल (गुरु-शषि्य)** का उपयोग करके प्रसारति कयिा गया था, जसिमें योग गुरु संबंधति ज्ञान और कौशल के मुख्य संरक्षक होते थे।

- **कुंभ मेला (उत्तर भारत):**
  - **कुंभ मेला** पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा **शांतपूर्ण जमावड़ा** है, जसिके दौरान यात्री पवत्रि नदी में स्नान करते हैं या डुबकी लगाते हैं।
  - यह उत्सव प्रतविर्ष में बारी-बारी से **इलाहाबाद, हरद्विार, उज्जैन व नासकि** में आयोजति कयि जाता है और इसमें जात, पंथ या लगि की परवाह कयि बगैर लाखों लोग भाग लेते हैं।
  - भक्तों का मानना है क **गंगा** में **स्नान करने से व्यक्त पापों से मुक्त हो जाता** है और उसे जन्म एवं मृत्यु के चक्र से मुक्त मलि जाती है।
  - हालाँक, इसके प्राथमक वाहक **अखाड़ों, आश्रमों अथवा धार्मक संगठनों से संबंधत हैं जो केवल भक्षा पर** जीवन यापन करते हैं।

- **दुर्गा पूजा (कोलकाता):**
  - **दुर्गा पूजा** एक वार्षिक त्योहार है जो हिंदू माँ **देवी दुर्गा** की **दस दिवसीय पूजा** का प्रतीक है।
  - देवी की पूजा **महालया (Mahalaya)** के उद्घाटन दिवस पर शुरू होती है, जब देवी के मिट्टी की मूर्तियों पर **नेत्र चित्रित** किये जाते हैं।
  - यह त्यौहार **दसवें दिन समाप्त होता** है, जब मूर्तियों को नदी में विसर्जित कर दिया जाता है जहाँ से मिट्टी आई थी।
  - दुर्गा पूजा की इस पहल के लिये सराहना की जाती है कि इसमें **हाशिये पर मौजूद समूहों** और **व्यक्तियों** के साथ-साथ **महिलाओं की सुरक्षा** में उनकी भागीदारी शामिल है।

- **गरबा (गुजरात):**
  - गरबा एक अनुष्ठानिक और भक्तिपूर्ण नृत्य है जो हिंदू त्योहार **नवरात्रि** के अवसर पर किया जाता है, जो **'शक्ति'** की पूजा के लिये समर्पित है।
  - यह नृत्य एक केंद्र में जलाकर रखे गए दीपक या देवी शक्ति की प्रतिमा अथवा मूर्ति के निकट किया जाता है, जो ब्रह्मांड में नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है।

नषि्करष:

भारत में जीवंत और ववििधि सांस्कृतकि परंपराओं, पारंपरकि अभवि्यक्तयिों, अमूर्त सांस्कृतकि वरिासत का एक वशिाल समूह है जसिके अंतर्गत उत्कृष्ट कृतयिाँ शामलि हैं जनि्हें सांस्कृतकि वरिासत के इन रूपों के अस्तति्व एवं प्रसार के लयिे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को संबोधति करने की दृष्टि से संस्थागत समर्थन तथा प्रोत्साहन की आवश्यकता है। भारत को वभिनि्न संस्थानों, समूहों, व्यक्तयिों, गैर-सरकारी संगठनों, शोधकर्त्ताओं एवं वदि्वानों को प्रोत्साहति (Revitalize) करने की आवश्यकता है ताकि वे भारत की समृद्ध अमूर्त सांस्कृतकि वरिासत को मज़बूत करने, संरक्षति करने और बढ़ावा देने हेतु गतविधियिों/परयिोजनाओं में संलग्न हो सकें।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न 1. भारत के धार्मकि इतहिास के संदर्भ में नमि्नलखिति कथनों पर वचिार कीजयिे: (2020)

1. स्थावरिवादी महायान बौद्ध धर्म से संबद्ध हैं।
2. लोकोत्तरवादनि संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासंघकि संप्रदाय की एक शाखा थी।
3. महासंघकिों द्वारा बुद्ध के देवत्त्वारोपण से महायान बौद्ध धर्म को प्रोत्साहति कयिा।

उपर्युक्तकथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 3
(d) 1, 2 और 3

प्रश्न 2. मणपिुरी संकीर्तन के संदर्भ में नमि्नलखिति कथनों पर वचिार कीजयिे: (2017)

1. यह एक गीत और नृत्य प्रदर्शन है।
2. केवल करताल (समिबल) ही वह एक मात्र वाद्ययंत्र है जो इस प्रदर्शन में प्रयुक्त होता है।
3. यह भगवान कृष्ण के जीवन और लीलाओं को वर्णति करने के लयिे कयिा जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) 1, 2 और 3
(b) केवल 1 और 3
(c) केवल 2 और 3

(d) केवल 1

प्रश्न 3. भारत की संस्कृतिएवं परंपरा के संदर्भ में 'कलारीपयट्टू' क्या है? (2014)

(a) यह शैवमत का एक प्राचीन भक्तिपंथ है जो अभी भी दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित है।
(b) यह काँसे और पीतल के काम की एक प्राचीन शैली का है जो अभी भी कोरोमंडल क्षेत्र के दक्षिणी हिस्से में पाई जाती है।
(c) यह नृत्य-नाटिका का एक प्राचीन रूप है और मालाबार के उत्तरी हिस्से में एक जीवंत परंपरा है।
(d) यह एक प्राचीन मार्शल कला और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में एक जीवंत परंपरा है।

?????:

प्रश्न. भारतीय कला विरासत का संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है। चर्चा कीजिये। (2018)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/intangible-cultural-heritage-ich-of-india